

موضوع الخطبة: الإيمان بأسماء الله وصفاته

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي (@Ghiras\_4T)

उपदेश का शीर्षक:

## अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअत(नवाचार) है और प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह का तक्वा अपनाओ और उससे डरो उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचो, और जानलो कि अल्लाह के नामों और विशेषणों पर ईमान लाने का इस्लामी आस्था में बड़ा महत्व है, अल्लाह ने अपने पवित्र पुस्तक में अपने नामों और विशेषणों की बड़ी प्रशंसा की है, अल्लाह का कथन है:

(وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا)

अर्थात: अल्लाह अति सुन्ने वाला, अति देखने वाला है।

अथवा अल्लाह ने फरमाया:

(وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا)

अर्थात: अल्लाह अति छमा प्रदान करने वाला, कृपा करने वाला है।

और इस प्रकार के अनेक प्रमाण हैं।

- जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में अनेक स्थान पर अपने रब की प्रशंसा की है और उसके जलाल व कमाल के विशेषण का उल्लेख किया है।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने से बंदों के अंदर अल्लाह का डर उत्पन्न होता है,जिसके फलस्वरुप बंदा अल्लाह की उसी प्रकार पूजा करता है जिस्से अल्लाह प्रसन्न होता है,क्योंकि तथ्य यही है जैसा कि कहा गया है:(जो अल्लाह को अधिक जानता है वह उससे अधिक डरता है)।

(इसे मोहम्मद बिन नसर अलमरवजी ने (ताजीमो कुदरतिस्सलात) :786 में अहमद बिन आसिम अलअनताकी से रिवायत किया है।) इसी लिए अल्लाह के नामों व विशेषणों को जानने वाले लोग अल्लाह से अधिक डरते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ)

अर्थात:अल्लाह से उसके वही बंदे डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।

- चूंकि अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने का यह महत्व है,इस लिए बंदा पर अनिवार्य है कि वह इसी प्रकार उसे पूरा करे जिस प्रकार धर्म में आया है,और वह इस प्रकार कि अल्लाह ने अपनी पुस्तक में और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत में जिन नामों और विशेषणों को प्रमाणित किया है,उन्हें उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जैसा अल्लाह के अभिमान के याग्य है।
- ए मोमिनो! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के दो तकाजे हैं:जिस प्रकार वह अवतरित हुए हैं उसी प्रकार उनके जाहेरि अर्थ को समझा जाए,बेगैर किसी हैर फैर,इनकार,गुणवक्ता एवं उदाहरण के,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

(وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَى)

अर्थात:अल्लाह के लिए तो ही उच्च विशेषण है।

अर्थात उसके लिए संपूर्ण विशेषण है,अल्लाह का कथन है:

(لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ)

अर्थात:उस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है।

अल्लाह पर ईमान लाने का दूसरा तकाजा यह है कि जो नाम और विशेषण कुरान व हदीस में अवतरित हुए हैं,उन पर ही बस किया जाए,और कोई ऐसा नाम एवं विशेषण न अविशकार किया जाए जो कि कुरान व हदीस में न हो,इमाम अहमद फरमाते हैं:अल्लाह तआला ने अपनी

पवित्र हस्ती के लिए जिन विशेषणों का उल्लेख किया है,उस्से अधिक उसका विशेषण बयान नहीं किया जा सकता।

(काज़ी अबू याली ने(तबकातुल हनाबिला)1/386के अंतर्गत हंबल बिन इसहाक के जीवनी में यह कथन उल्लेख किया है)

- ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने का विपरीत यह है कि उनमें नास्तिकता किया जाए,शब्दकोश में नास्तिकता का अर्थ झुकने और माएल होने के हैं,इसी से क़बर में जो लहद होती है,उसे लहद का नाम दिया जाता है,क्योंकि वह क़बर के एक ओर झुकी होती है,इस आधार पर नामों और विशेषणों में नास्तिकता का अर्थ यह है कि उनके अर्थ एवं सार को समझने में इस सत्य समझ से बचा जाए जो अरबी भाषा पूर्वजों के विचार का तकाजा है।

नास्तिकता के अनेक प्रकार हैं,उन सब का आधार इस पर है कि या तो सत्य अर्थ को ऐसे अर्थ की ओर फेर दिया जाए जो उसका **उद्देशन** हो,या इसे पूर्ण रूप से व्यर्थ कर दिया जाए,यह दोनों ही अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के **विरुद्ध** हैं,यह बेगैर ज्ञान के अल्लाह की ओर किसी बात को फेरना है,उन नवाचारों में से है जिन के मानने वालों को धार्मिक पूर्वजों और उनके अनुयायियों ने कठोर खंडन किया है,और यह उन पापों में से है जिन पर अल्लाह ने यातना बताई है,अल्लाह का शरण,अल्लाह का कथन है:

(وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ سَيُحْزَنُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ)

अर्थात: अच्छे अच्छे नाम अल्लाह के लिए हैं इसलिए उन नामों से केवल अल्लाह ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से संबंध भी न रखो जो उसके नामों का खंडन करते हैं,उन लोगों को इनके लिए अवश्य यातना मिलेगी।

(وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا)

अर्थात:जिस बात का तुझे पता न हो उसके पीछे मत पड़ो,क्योंकि कान और आंख और दिल उनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह के नामों और विशेषणों में नास्तिकता का सबसे प्रसिद्ध प्रकार यह है कि उनमें हेरफेर किया जाए,अर्थात उनके अर्थ को उन वास्तव अर्थों से फेर दिया जाए जिनका तकाजा अरबी भाषा और सलफे सालेहीन( धार्मिक पूर्वजों)की समझ करती है,जैसे सहाबा और नेकनीयती के साथ उनके अनुयायियों,जिन्होंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समझ प्राप्त की,उनकी समझ का क्या कहना,खुद पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी अच्छाई

की गवाही दी है,आप पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है:“सबसे अच्छे और बेहतर लोग हमारे युग के लोग हैं,फिर वे लोग हैं जो उनके बाद के होंगे,फिर वे लोग जो उनके बाद के होंगे”

(इसे बोखारी 2652 और मुस्लिम 2533 ने अबदुल्लाह बिन **मसऊद** रज़िअल्लाहु अनहु से रिवायत किया है।)

हर वह बात जो सहाबा की समझ के **विरुद्ध** हो उसका इस्लाम धर्म से कोई संबंध नहीं,बल्कि वह धर्म में अविशकारित मनघड़त तरिका है,इस्लाम से उसका कोई संबंध नहीं।

- अल्लाह के नामों व विशेषणों में हेरफेर का एक उदाहरण यह है कि अरश पर अल्लाह के मुस्तवी होने की तफसीर यह कीजाए कि वह उस पर हावी व प्रभावित है,और इसका इनकार किया जाए कि उसका अर्थ अल्लाह का अरश पर बोलंद होना है,अल्लाह तआला उच्च व महान है।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों में नास्तिकता का एक प्रकार यह है कि उनमें तकयीफ(कैफियत बयान कया जाए ),अर्थात अल्लाह के किसी विशेषण की तकयीफ व माहियत मालूम किया जाए,जो कि हराम है,इस लिए कि अल्लाह ने इस बात का इनकार किया है कि उसके बंदे उसके किसी गुण को सिमित करें,अल्लाह का कथन है:

(وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا)

अर्थात:जीवों का ज्ञान उस पर हावी नहीं हो सकता।

इस आयत में अल्लाह ने इस बात का कठिन शब्दों में खंडन किया है कि उसके गुणों,कैफियत व प्रकृति जानने की चाहत रखी जाए।

सलफे सालेहीन (धार्मिक पुर्वजों)ने उस व्यक्ति को कठोर नकारा है जो इस ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है,एक व्यक्ति इमाम मालिक बिन अनस रहिमहुल्लाह के पास आया और पूछा:ए अबू अबदुल्लाह! रहमान अरश पर मुस्तवी (स्थिर) है,वह कैसे मुस्तवी है?

रावी कहते हैं:इमाम मालिक ने सर झुका लिया यहां तक कि पसिने में डूब गये,फिर फरमाया:"इस्तेवा का अर्थ प्रसिद्ध है,इसकी कैफियत मनुष्य के बुद्धि से परे है,उसपर ईमान लाना अनिवार्य है,उसके प्रति प्रश्न करना नवाचार है,मुझे तो तुम बिदअति लगते हो"और आप ने उन्हें बाहर निकालने का आदेश दिया।

(इसे बैहकी ने "अलअसमा व अलसिफात":866.867 में रिवायत किया है।)

- इब्ने ओसैमीन रहिमहुल्लाह ने इमाम मालिक के कथन पर टिप्पणी करते हुए जो बात कही है उसका सार यह है कि:मालिक का कथन समस्त गुणों कासंतुलन है,जो लोग अल्लाह के गुणों की कैफियत के बारे में प्रश्न करते हैं,उनका प्रश्न करना नवाचार है,क्योंकि सहाबा अच्छाई और अल्लाह के जिन गुणों को प्रमानित करना अनिवार्य है,उनका ज्ञान प्राप्त करने के सबसे अधिक जिज्ञासी थे,इसके बावजूद कभी भी उन्होंने ने अल्लाह तआला के किसी विशेषण के बारे में प्रश्न नहीं किया"। आप का कथन समाप्त हुआ।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों में नास्तिकता का एक प्रकार तशबीह (समानता )देना है,अल्लाह तआला अपने बंदों की समानता से उच्च है।

नईम बिन हमाद अलखेजाई रहिमहुल्लाह.जो बोखारि के शिक्षक हैं वह कहते हैं:जिसने अल्लाह को उसके जीव से समानता दिया वह काफिर है,जिसने उनके गुणों का इनकार किया जिनका उल्लेख अल्लाह ने अपने प्रति किया है तो वह भी काफिर है,अल्लाह और उसके रसूल ने अल्लाह के जिन गुणों का उल्लेख किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाता।  
(अलओलूम:464)

- ए मोमिनो! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों को बेगैर किसी तहरीफ(हेरफेर )के उसी प्रकार समझना जैसे वह अवतरित हुए हैं,उन आसथाओं में से है जिन पर चारों पंथों आदि की आम सहमति है,इमाम अहमद बिन हसन अलशैबानी.जो कि इमाम अबू हनीफा के क्षात्र हैं.का कथन है:पूर्व से लेकर पश्चिम तक के समस्त विधिवेत्ताओं का इस बात पर सहमति है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं के माध्यम से जो कोरान व अहादीस हम तक पहुंची हैं,उन में अल्लाह तआला के जो विशेषण हैं,उन पर बेगैर किसी तफसीर,तौसीफ और तशबीह के ईमान लाना अनिवार्य है,जिस ने उनमें से किसी का मनचाही व्याख्या की वो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग इसलाम से बाहर है,क्योंकि उन्होंने ने उन विशेषणों की मनचाही व्याख्या नहीं की है,बल्कि कोरान व हदीस में जो कुछ आया है, उन

पर ही बस किया और उसके पश्चात खामोशी अपनाई है।  
(अलकालकाई की पुस्तक"शरहो उसूले एतेकादे अहलुस सुन्नत व  
अलजमाअत" :3 / 480)

- ईमाम शाफेई रहिमहुल्लाह का कथन है:में अल्लाह पर उसकी मुराद के अनुसार और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनके मुराद के अनुसार ईमान लाता हूं।(इस कथन को अबदुल्लाह बिन अहमद बिन कोदामा(620)ने अपनी पुस्तक "जमु अलतावील"पृष्ठ संख्या(:222. 256) में उल्लेख किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:कुरान में अल्लाह के विशेषणों पर आधारित जितनी भी आयते हैं,उन की व्याख्या में सहाबा के बीच कोई विरोध नहीं पाया जाता है,में ने सहाबा से वर्णित समस्त व्याख्याओं और हदीसों का अध्ययन किया,इस विषय में छोटी बड़ी सो से अधिक व्याख्याओं का मैंने अल्लाह की इच्छा से समीक्षा किया,मैंने अब तक किसी सहाबी के बारे में यह नहीं पाया कि उन्होंने ने अल्लाह के विशेषणों पर आधारित किसी भी आयत अथवा हदीस की ऐसी व्याख्या की हो जो उसके प्रसिद्ध अर्थ और तकाजे के **विरुद्ध** हो,बल्कि उन आयात व अहादीस में वर्णित विशेषणों को सिद्ध करने में उनसे अनेक कथन वर्णित हैं जिन से व्याख्या करने वालों का विरोध और खंडन होता है।("मजमूउलफतावा":6 / 394)आप रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- इब्ने कसीर रहीमहुल्लाह अल्लाह तआला के कथन

(ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ)

की व्याख्या में लिखते हैं:रही बात अल्लाह तआला के फरमान: (ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ) की तो इस विषय में लोगों के एतने कथन हैं कि इस स्थान पर उन्का उल्लेख नहीं किया जा सकता,बल्कि इस स्थान पर सलफे सालेही (नधारिर्मक पुर्वजों) का मार्ग अपनाया जाए,जैसे मालिक,औजाई,सौरी,लैस बिन साद,शाफेई,अहमद,इसहाक बिन राहवैय और उन जैसे दिगर नए व पुराने इमामों का मार्ग,वह मार्ग यह है कि उन नामों व विशेषणों को उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जिस प्रकार वे आए हैं,उनमें कोई तकयीफ,समानता और इनकार न किया जा जाए,उन नामों व विशेषणों का जो जाहेरी अर्थ समानता बताने वालों के दिल में आता है,वह अल्लाह से

उस अर्थ का नकीर करते हैं,कोई भी जीव अल्लाह के जैसा नहीं हो सकता:

(لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ)

अर्थात:उस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है। बल्कि सत्य वह है जिस का वर्णन इमामों ने की है जिन में इमाम बाखारी के शिक्षक नईम बिन हम्माद बिन अलखोजाइ भी हैं, वह कहते हैं:"जिस ने अल्लाह को जीव से समानता दी उसने कुफर किया,जिसने किसी विशेषण का इनकार किया जिस्से अल्लाह ने खुद को संबोधित किया है,उसने कुफर किया है,अल्लाह और रसूलुल्लाह ने जिन विशेषणों को अल्लाह के लिए प्रमाणित किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाती",तो जो व्यक्ति अल्लाह तआला के लिए उन विशेषणों को जो स्पष्ट आयतों और हदीसों में आई हैं,उसी प्रकार प्रमाणित करे जो उसकी महानता के याग्य है,तथा अल्लाह तआला से प्रत्येक प्रकार के दोषों एवं अवगुणों का खंडन करे तो वह सत्य मार्ग पर है।आप रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- अबदुर्रहमान बिन अलकासिम रहिमहुल्लाह(आप इमाम अबदुर्रहमान बिन अलकासिम हैं,उनके बारे में इमाम ज़हबी ने "तारीखुल इसलाम":4/1149 में लिखा है:वह बड़े विद्वानों में से हैं,और इमाम मालिक के उन महान छात्रों में से हैं जिन्होंने उनके पंथ को बढ़ावा दिया.... उनका निधन 191 हिजरी में हुआ।) फरमाते हैं:किसी मनुष्य के लिए यह उचित नहीं कि वह किसी ऐसे गुन को अल्लाह से जोड़े जिस्से अल्लाह ने अपनी हस्ती को कुरान में उल्लख नहीं किया है,और न उसके हाथों को किसी चीज से समानता दे,बल्कि यह कहे कि:"उसके दो हाथ हैं,जैसा कि कुरान में उसने अपनी हस्ती के गुन बताए हैं,और उसका एक चेहरा है जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया है"।अल्लाह ने कुरान में अपने जो विशेषण बयान किये हैं,उन पर ही बस करे,क्योंकि कोई अल्लाह तआला के सामान नहीं,बल्कि वह अल्लाह है जिसके सेवा कोई सत्य परमेश्वर नहीं,जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया

है,उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं,जैसा कि अल्लाह ने अपने हाथों का गुन बयान किया है और यह भी गुन बयान किया है कि:

(وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ)

अर्थात: सारी धरती केयामत के दिन उसकी मुठठी में होगी और सारे आकाश उसके दाहने हाथ में लिपटे हुए होंगे।

आप रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।("ओसूलुस्सुन्न":42,अनुसंधान:अहमद बिन अली अलकोफैली,प्रकाशक:दारुलफुरकान,मिस्त्र)

अल्लाह तअ़ाला कुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और हिकमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तअ़ाला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूँ,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

## द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मुसलमानो!मनुष्य की बुद्धि,हृदय और उसके शरीर के अंगों के लिए अल्लाह तअ़ाला के

नामों व विशेषणों के अर्थ को जानने के अनेक लाभ हैं,इब्नुलकयूम

रहिमहुल्लाह लिखते हैं:(अल्लाह तअ़ाला के)सुंदर नामों और उच्च गुणों,पूजा पाठ एवं जीवन के मामलों पर इन्हीं प्रभावों का तकाजा करते हैं, जो प्रभाव रचना एवं निर्माण पर लागू होते हैं,प्रत्येक विशेषण की एक विशेष बंदगी है,जिस्से यह अनिवार्य होता है कि उसको

जाना जाए और उसका ज्ञान प्राप्त किया जाए,और यह चीजहृदय

और शरीर के भागों एवं अंगों से पूरी की जाने वाली पूजा के समस्त प्रकारों में समान है,इसलिए बंदा यह जानले कि अल्लाह तअ़ाला लाभ व हानी,प्रदान व वंचन,रचना व



रिज्क,जीवन और मृत्यु देने में अकेला है,उसको जानने का यह लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में अल्लाह पर विश्वास करने का जज़बा पैदा होता है और जाहिर में तवक्कुल( विश्वास) के आव भाव एवं परिणाम जाहिर होते हैं।

बंदा का अल्लाह तआला के देखने व सुन्ने और ज्ञान का अवज्ञत होना और यह जान लेना कि आकाशों एवं धर्ती में राई के दाने के बराबर भी कोई चीज उससे छुपी नहीं,वह समस्त छुपी और खुली चीजों को जानता है,वह आंखों कि ख्यानत और दिल के भेद से अवज्ञत है,इसको जानने का लाभ यह होता है कि बंदा अपने जीभ,शरीर के अंगों और हृदय के ख्यालात को ऐसी बातों से सुरक्षित रखता है जो अल्लाह को पसंद नहीं,तथा उन अंगों को ऐसे कामों में लगा के रखता है जो अल्लाह को पसंद हैं,इसका लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में हया पैदा होती है,और यह हया उसे हराम और बुरे कामों से दूर रखता है।

इसी प्रकार बंदा का अल्लाह की महानता और प्रतिष्ठा से अवज्ञत होना,उसके अंदर विनर्मता एवं प्रेम को जन्म देता है और जाहेरि प्रार्थना के ऐसे प्रकारों से उनके जीवन को भर देता है जो अल्लाह के ज्ञान से ही **उत्पन्न** होती है।इसी प्रकार बंदा का अल्लाह के संपुर्ण एवं उच्च गुणों से अवज्ञत होना उसके अंदर ऐसा प्रेम पैदा करता है जो प्रार्थना के साथ खास होती है।

इसी प्रकार समस्त प्रकार की पूजा पाठ नामों एवं विशेषणों के तकाजों के ओर ही लोटती हैं और उनसे उसी प्रकार संबंध रखती हैं जिस प्रकार जीव उनसे संबंधित हैं,अल्लाह तआला का पैदा करना और(प्रत्येक प्रकार का)आदेश देना इस संसार में उसके नामों व विशेषणों के लवाजेमात,प्रभाव और तकाजे हैं।("मिफताहो दारिस्सआदा":2/510.511)आप रहिमहुल्लह का कथन समाप्त हुआ।

- तथा यह भी जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि अल्लाह तआला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात:अल्लाह तआला और उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोहम्मद पर रहमत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा ।

ए अल्लाह! प्रत्येक कठिनाई पापों के कारण अवतरित होती है और तौबा के माध्यम से ही दूर होती है,हम पापों को स्वीकारते हुए तेरे द्वार में अपने हाथ फैलाए हुए हैं,हमारे सर तौबा के साथ तेरे द्वार पे झुके हुए हैं ।

ए अल्लाह!यमन,इराक़,सीरया,फलसतीन और लीबिया और दूसरे इसलामी देशों में शांति फैला दे ।

ए हमारे रब!हमें दुनिया मे पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर ।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

**लेखक:**

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

**२१**रजब **१४४२**हिजरी

जूबैल,**सऊदी**अरब

**अनुवाद:**

फैजुर रहमान हिफजुर रहमान तैमी